आखर हिंदी पत्रिका ; e-ISSN-2583-0597 खंड 4/अंक 4/दिसंबर 2024
Received: 16/12/2024; Accepted: 20/12/2024; Published: 30/12/2024

देशप्रेम और त्याग की मिसालः देशबन्धु चित्तरंजनदास

डॉ. अनिता पाटिल
सहायक प्रवक्ता, हिन्दी विभाग,
गुरु नानक महाविद्यालय (स्वायत्तशासी)
वेलाचेरी, चेन्नई, तमिलनाडु 600042
7448812431,9884749285
anita.patil@gurunanakcollege.edu.in

डॉ. अनिता पाटिल, **देशप्रेम और त्याग की मिसालः देशबन्धु चित्तरंजनदास**, आखर हिंदी पत्रिका, खंड 4/अंक 4/दिसंबर 2024,(294-299)

देश प्रेम एक ऐसी भावना है जो कभी कम नहीं होती है। भले ही हमें आजाद हुए कई साल हो चुके हैं। आज भी वीर युवकों, युवतियों में यह भावना विद्यमान है। हर कोई अपने देश के लिए कुछ ना कुछ करना चाहता है। आज भी जब हम देश प्रेम से संबंधित चलचित्र देखते हैं तो हमारे रोगंटे खड़े हो जाते हैं। देश के लिए कुछ करने की भावना हम सब में जागृत हो जाती है। जैसे-जैसे समय बदलता जा रहा है, देश प्रेम के मायने भी बदलते जा रहे हैं। हम आजाद हैं लेकिन हमें अलग-अलग समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। आजादी से पहले हमारा मुख्य उद्देश्य ब्रिटिश सरकार से आजाद होना था। अब कई ऐसी छोटी बड़ी समस्याएं हैं, जिनमें हम उलझ कर रह गए हैं। हमारी आने वाली पीढ़ियों को उन वीर स्वतंत्रता सेनानियों के बारे में जागृत करना इस लेख का उद्देश्य है। यह आजादी अनगिनत त्यागों और बलिदानों से मिली है। जो अमूल्य है। वीर स्वतंत्रता सेनानियों के बारे में हमारी वर्तमान पीढ़ी को जागृत करना बहुत आवश्यक है। अक्सर देखा गया है कि अधिकतर स्वतंत्रता सेनानियों के बारे में हमारे बच्चों को पता ही नहीं है। इस लेख के माध्यम से महान देशबंधु चितरंजनदास जी के जीवन और देश के प्रति उनके प्रेम तथा त्याग पर प्रकाश डाला गया है।

देशबंधु चितरंजनदास भारत के प्रसिद्ध वकील, कवि, पत्रकार और स्वतंत्रता आंदोलन के प्रमुख नेता थे। वे प्रगाढ़ देशप्रेम, अद्भुत लग्न, असीम उदारता तथा जीवनदाई शक्ति के गुणों से संपन्न थे। चितरंजन दास जी का जन्म 5 नवंबर सन्1870 ईस्वी को कलकत्ता के पटलडांगा स्ट्रीट के एक मकान में हुआ था। इनके पिता श्री भुवनमोहन दास जी सालिसिटर थे। वे कविताएं और गीत लिखते थे और एक अच्छे पत्रकार भी थे।। अपमे समय में वह ब्रह्म

समाज के मुखपत्र ब्रह्मो पब्लिक ओपिनियन के संपादक थे। इनकी माता का नाम निस्तारिणी देवी था। वे राममोहन राय की अनुयायिनी थी परन्तु सामाजिक एवं घरेलू विषयों में उनके विचार हिंदुओं से अधिक मिलते जुलते थे। सन् 1878 ई. में चितरंजन भवानीपुर के लंदन मिशनरी सोसायटी इंस्टिट्यूशन में भर्ती हुए। बचपन से ही वे तीव्र बुद्धि, हंसमुख, प्रसन्नचीत और उत्साही थे।1885 ई. में इसी स्कूल से उन्होंने एंट्रेंस की परीक्षा पास की। एंट्रेंस परीक्षा पास करने के बाद वह प्रेसीडेंसी कॉलेज में भर्ती हुए। यहाँ बंगाली के भूतपूर्व संपादक श्री पृथ्वीशचंद्र राय के साथ उन्होंने अंडर ग्रेजुएट एसोसिएशन का संगठन किया। जिसका उद्देश्य बांग्ला भाषा को भी एंट्रेंस के ऐच्छिक विषयों में स्थान दिलाना था। इस कार्य में उन्हें सफलता नहीं मिली। 1890 ई. में इन्होंने बी. ए. पास किया और भारतीय सिविल सर्विस की परीक्षा लिखने के लिए इंग्लैंड चले गए। उसमें भी वे सफल नहीं हुए लेकिन उसी वर्ष बैरिस्टर की परीक्षा पास की। 1893 ई. में भारत लौटने पर कलकत्ता हाईकोर्ट में भर्ती हो गए लेकिन चार्ल्स पाल, जॉन उड़रफ, मनमोहन घोष जैसे नामी वकीलों के सामने उनकी वकालत न चल सकी। समय बिताने के लिए उन्होंने अपना ध्यान साहित्य रचना की तरफ लगाया। 3 दिसंबर 1897 में को विजनी स्टेट के दीवान वरदानाथ हालदार की कन्या बसंती देवी के साथ उनका विवाह हो गया। उस समय उग्रवादी दल के अनेक समाचार पत्र खुल्लम-खुल्ला सरकार की नितियों का विरोध करने लगे थे। अपनी साख बचाए रखने के लिए सरकार ने इनके विरुद्ध कदम उठाने का निर्णय लिया और सबसे पहले अंग्रेजी दैनिक पत्र वंदेमातरम पर कार्यवाही की। इन पत्रिकाओं के प्रकाशन में चितरंजन दास, सुबोध मलिक तथा उनके एक और मित्र शामिल थे। इनकी संपादक कमेटी के मुखिया अरविंद घोष थे। अरविंद घोष पर सरकार ने मुकदमा चलाया इस मुकदमे में अरविंद घोष के वकील चितरंजन थे और उन्होंने यह मुकदमा जीता।

सन्ध्या और युगान्तर नाम के दो और पत्र बंगला में क्रमश: श्री ब्रह्मबांधव उपाध्याय और श्री भूपेंद्रनाथ दत्त के सम्पादन में निकल रहे थे। इन दोनों पर भी सम्पादक की हैसियत से राजद्रोह का मुकदमा चलाया गया। इनकी पैरवी भी चितरंजन ने की। ब्रह्मबांधव बाबू का निधन मुकदमा खत्म होने पहले ही हो गया और भूपेन्द्रनाथ दत्त को एक वर्ष की कड़ी कैद की सजा सुनाई गई। 30 अप्रैल 1908 को खुदीराम बोस और प्रफुल्ल चाकी नामक दो युवको को सरकार ने गिरफ्तार किया । उन्होंने श्री किंग्सफर्ड के धोखे में श्री प्रिंगल केनेडी की गाड़ी पर बम फेका था और इस हादसे में उनकी पत्नी और बेटी की मृत्यु हो गई थी। इस संदर्भ में सरकार ने गंभीरता के साथ तीव्रता दिखाते हुए 36 युवकों को गिरफ्तार किया जिनमें अरविन्द घोष भी थे। श्री अरविन्द्र घोष की पैरवी चितरंजन ने की। चितरंजन ने इस मुकदमें में अपनी प्रतिभा और जिरह करने की अपूर्ण शक्ति का ऐसा परिचय दिया कि जज, जनता और वकील सब दंग रह गए। उनके कठिन परिश्रम और तर्कशीलता के कारण अरविन्द घोष को निर्दोष कहकर छोड़ दिया। और जज ने उनकी योग्यता की बड़ी प्रशंसा की। इस मुकदमें के बाद से सफलता ने उनका साथ नहीं छोड़ा। उस समय से चितरंजन की गिनती देश के श्रेष्ठ वकीलों में होने लगी और उनके पास बहुत काम आने लगा। वकालत में उनकी सफलता का एक कारण यह भी था कि वे अपने हर मुकदमें के लिए जी जान से रात दिन परिश्रम करते थे। जिरह करने में वह अद्वितीय थे। विरोधी पक्ष का वकील कितना भी प्रबल क्यों न हो वह उसके तर्कों को टुकडे - टुकडे करके फेंक देते थे। उन्होंने फौजदारी के साथ-साथ दीवानों

के मुकदमें भी लड़े तथा उनमें भी सफलता प्राप्त की। उनका 1914 का डुमरांव वाला मामला भी काफी प्रसिद्ध हुआ था जहाँ उन्होंने एक गरीब आदमी को अपनी प्रतिभा के बल पर डुमराव की गद्दी पर बैठा दिया था। 1913 में उन्होंने हाईकोर्ट के सामने दख्वास्त दी कि हमारे दिवालिये पन की घोषणा रद्द कर दी जाए। उन्होंने अपना और अपने पिता का पावना कौड़ी - कौड़ी चुका दिया। उनके इस नैतिक कार्य का असर हाईकोर्ट के जजों पर भी हुआ जस्टिस फ्लेचर ने उनकी तारीफ की। सन 1920 में उनकी मासिक आय 50000 रूपये थी। उनके व्यक्तित्व की विशेषता उनकी दृढ़ इच्छा शक्ति थीं। विपक्षी वकील के सामने कभी नहीं झुकते थे।

1905 ई. में भारत में जो नवीन चेतना आई उसका असर चितरंजन के हृदय पर भी पड़ा। भौतिकवाद के बढ़ते हुए प्रवाह में भारत ने अपनी भुली हुई अध्यात्मिक चेतना की सुधी ली। अरविन्द घोष ने अपने पत्रों में अध्यात्म को राजनीति में मिला दिया था, चितरंजन बड़ी गंभीरता से उनके लेख पढ़ते थे वे उससे अत्यन्त प्रभावित हुए। 1917 में कलकत्ता में बंगाल प्रांतीय कॉन्फ्रेंस का अधिवेशन हुआ। चितरंजन उसके सभापति थे। उन्होंने एक अत्यन्त उत्साहप्रद और ओजस्वी भाषण दिया जिसमें उन्होंने आधुनिक भौतिकवाद के बढ़ते कुप्रवाह के विरुद्ध जबर्दस्त अपील की और कहा कि उपनिषद और बुद्ध के जमाने से भारत संसार को प्रकाश देता रहा है और आज इस समय भी भारत को अपना संदेश देना होगा।

यहीं से चितरंजन का राजनीति में प्रवेश हुआ। कम समय में ही उन्हें अधिक प्रसिद्धि मिली । उनकी प्रसिद्धि का एक और कारण भी था। मांटेगू मिशन के सामने गवाही देते समय उन्होंने अपने बयान में भारतीयों का अर्थ पर पूरा अधिकार तथा देश की सब नौकरियों पर भारतीय अधिकार की मांग की। इससे श्री मांटेगू आश्चर्यचकित रह गए और चितरंजन जनता के अधिक करीब आ गए। चितरंजन यहीं नहीं रुके उन्होंने पूर्वी बंगाल के जिलों में घूम-घूमकर नवीन राष्ट्रधर्म की शिक्षा लोगों को दी। पहले राजनीतिक क्षेत्र में वे केवल दर्शक थे किन्तु अब कांग्रेस में शरीक होने लगे और अपनी भाषण शक्ति एवं प्रभाव के कारण अकसर महत्वपूर्ण कमेटियों में चुने जाने लगे।

असहयोग आन्दोलन : पहले चितरंजन असहयोग कार्यक्रम के विरुद्ध थे परन्तु महात्मा गाँधी से उनका समझौता होने के पश्चात् वे उसके कट्टर समर्थक के रूप में उभरे। 1921 में बेजवादा में भारतीय कांग्रेस कमेटी ने असहयोग का नवीन कार्यक्रम बनाया। इसमें एक करोड़ स्वयंसेवक बनाने, एक करोड़ रुपया तिलक स्वराज्य-कोष के लिए एकत्र करने और २० लाख चरखे चलाने का निश्चय हुआ। चितरंजन बंगाल में घूम-घूमकर स्वयं सेवक बनाने और चन्दा उगाहने के काम में लग गए। यहीं नहीं उनकी पत्नी और बहन भी खद्दर बेचते हुए पुलिस द्वारा पकड़ी गई लेकिन बाद में उन्हें रिहा भी कर दिया गया। 1921 में असहयोग आन्दोलन में सम्पूर्ण भारत देश में बड़ी संख्या में राष्ट्रीय चेतना की लहर उठी किन्तु बहुत जल्दी ही यह हिंसक रूप धारण कर गई और असफल भी हो गयी। दो तीन स्थानों पर पुलिस और जनता के बीच मुठभेड़ हुई। चोरी-चौरा का काण्ड बहुत भयानक था। जिसमें लोगों ने थाने में आग लगा दी और कई पुलिसवाले इसमें मारे गए। इस घटना से दुखी होकर गाँधी जी ने सविनय अवज्ञा आन्दोलन वापस ले लिया। फरवरी 1922 में चितरंजन गिरफ्तार हुए उन्हें

छः महीने की सजा हुई। मार्च 1922 में गाँधी जी को गिरफ्तार कर उन्हें छ वर्ष की सजा सुना दी गई। गांधी जी के जेल जाने के बाद देश को ऐसा कोई नेता नहीं मिला जो उनके कार्यक्रम के अनुसार जनता को चला सके।
चित्तरंजन ने जेल में रहते हुए इस बात पर गंभीर चिन्तन किया कि सरकार ने कौंसिलों का जाल फैला रखा है और वह भारतीय मंत्रियों के नाम पर जो चाहती है वही करती है। इसलिए उसके गढ़ में घुसकर ही उसे सबक सिखाना होगा। इसी विचार वे जेल से बाहर आए। यह सब इतना आसान नहीं था। कौंसिल प्रवेश को लेकर कांग्रेस में दो दल बन गए। इसमें चितरंजन जी को हताशा का सामना करना पड़ा। 11 जनवरी 1923 को चितरंजन ने भारतीय कांग्रेस कमेटी की अध्यक्षता से इस्तीफा दे दिया और स्वराजदल की नींव डाली तथा घोषणा की कि 6 महीने के अन्दर अल्पमत को बहुमत में बदल देंगे। चित्तरंजन के अन्दर जो अद्‌भुत कार्यशक्ति थी, उसके दर्शन उस समय हुए। सारे देश को भाषणों, घोषणाओं तथा कार्यक्रमों में उन्होंने डुबा दिया। ऐसा प्रतीत होता था जैसे देश के सार्वजनिक जीवन में एक बाढ़ आ गई है। दूसरी तरफ कांग्रेस के दोनों दलों के बीच विरोध का अलग ही नजारा था। सितम्बर1923 में दिल्ली में मौलान अबुलकलाम आजद की अध्यक्षता में अधिवेशन हुआ। इसमें कांग्रेस वालों को कौसिल में जाने और वोट देने की छूट दी गई। यह चित्तरंजन के लिए बड़ी सफलता थी। जब चुनाव हुआ तो बंगाल, मध्य प्रान्त एवं बड़ी कौंसिलों के लिए स्वाराजी बहुत अधिक संख्या में चुने गए।
यहाँ से भारतीय राजनीति में स्वराजदल का दृढ भिति पर जन्म हुआ। चितरंजन स्वयं बंगाल कौंसिल के लिए खड़े हुए और चुने गए। उनके अतिरिक्त स्वराजदल के 40 सदस्य भी चुने गए। यह सब पहली बार हुआ था। बंगाल के गवर्नर लार्ड लिटन ने सबसे बड़े दल के नेता की हैसियत से चितरंजन को मंत्रीमण्डल का संगठन करने के लिए आमन्त्रित किया परन्तु 16 दिसम्बर 1923 को चित्तरंजन ने गवर्नर को इस विषय में अपनी असमर्थता प्रकट करते हुए इन्कारी पत्र लिख दिया। अगला उन्होंने नौकरशाही को अपना निशाना बनाया। 1924 ई. में दो बार तथा 1925 ई. में एक बार मंत्रियों की नियुक्ति एवं वेतन का सरकारी प्रस्ताव अस्वीकृत करवाया | उस समय सरकार और चितरंजन में राजनीतिक चालें चली जाती थी। सरकार के भीतर सभी मंझे हुए खिलाड़ी थे फिर भी हर बार जीत चितरंजन की ही होती थी।
चितरंजन बहुत दुरदर्शी थे उन्होंने सोचा कि यदि कॉर्पोरेशन को हाथ में कर लिया जाए तो कॉग्रेस और स्वराज दल को बंगाल में एक स्थायी सहारा प्राप्त हो सकता है, इसी के साथ नगर की अच्छे से सेवा भी हो जाएगी। राष्ट्रीय विचार के योग्य कार्यकर्ताओं की जीविका की समस्या भी थोडी हल हो जाएगी ।1924 में जब चुनाव का समय आया तो स्वराज दल ने कॉर्पोरेशन के लिए अपने उम्मीदवार खड़े किए और इसमें उसे बड़ी सफलता मिली। 75 निर्वाचित सदस्यों में से 55 स्वराजदल के चुने गए और चितरंजन मेयर (अध्यक्ष) निर्वाचित हुए।
1921 ई. में बम्बई में पहली ट्रेड यूनियन कॉग्रेस हुई,1922 में झरिया में दूसरी । यह मजदूरों के यूनियन संगठन का पहला प्रयास थी 1923 में लाहौर में जो अधिवेशन हुआ उसके अध्यक्ष चित्तरंजन ही थे, अपने भाषण में उन्होंने कारखानों एवं उद्योग धंधों के सम्बन्ध में कानून बनाने की योजना रखी। दूसरे ही साल भारतीय धारा

सभा से मजदूर- मुआवजा कानून पास हुआ इसमें कारखाने में काम करते समय किसी दुर्धटना के दौरान मजदूरों को चोट लगने, आहत होने, जल जाने, अंग भंग हो जाने की हालत में किंचित मुआवजा मिलने की व्यवस्था हुई। बंगाल के फरीदपुर जिले के मदारीपुर सबडिवीजन के अन्दर चारमिनार में 1924 के आरम्भ में दंगा हो गया। इसमें महिलाओं के साथ पुलिसवालों ने बड़ा बुरा व्यवहार किया तथा उनकी इज्जत पर भी हमला किया। जिस व्यक्ति ने पुलिस पर यह आरोप लगाया वह कांग्रेस-स्वराजदल का कार्यकर्ता था, उसे पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। गवर्नर लार्ड लिटन ने पुलिस दरबार में इसकी सफाई देतो हुए कहा कि यह इल्जाम झूठा है। पुलिस को लोगों की नजरों से गिराने के लिए इस तरह का षड्यंत्र रचा गया है।

सभी स्त्रियाँ मनगढंत आरोप लगा रही हैं। इससे पूरे बंगाल में आक्रोश छा गया, सभी विद्रोह करने को आतुर थे। टाउनहाल के मैदान में भीड़ समा नहीं पा रही थी और समाचार पर आलोचनाओं से भरे रहते थे। अन्त में हार कर लार्ड बिटन को माफी माँगनी पडी। इस असंतोष का उपयोग चित्तरंजन ने स्वराज दल की वृद्धि और उसके अनुकूल वातावरण तैयार करने में कर लिया। सरकार भी सतर्क हो गयी 1924 ई. में ई. में वायसराय की स्वीकृति से बंगाल सरकार ने आर्डिनेस जारी किया। अपनी दमनकारी नीति के तहत 80 क्रान्तिकारियों को नजरबन्द कर दिया। इनमें कई चित्तरंजन के करीबी तथा प्रमुख कार्यकर्ता भी थे। दरअसल यह स्वराजदल की बढ़ती शक्ति को कम करने के लिए किया गया था।

चित्तरंजन ने इसका विरोध किया पर सरकार की यह नीति जारी रही और 1925 ई. तक नजरबन्दों की संख्या 200 तक पहुँच गई। 3 जनवरी 1925 को अचानक से चित्तरंजन का स्वास्थ्य खराब हो गया। डॉ. को सन्देह था कि उन्हें भोजन में विष देकर मारने की चेष्टा की गई है। समय के साथ साथ सेहत इतनी अधिक खराब हो गयी कि बिना डॉक्टरों की अनुमति के कोई उनसे नहीं मिल सकता था। डॉ. की सलाह पर वह दार्जिलिंग गए वहाँ रोज वह दूर तक टहलने के लिए जाते। ऊपर से उनका स्वास्थ्य अच्छा लगता लेकिन भीतर ही भीतर वह खोखाला हो रहा था। जून के आरम्भ में महात्मा गाँधी उनसे मिलने आए कुछ दिनों तक उनके साथ रहें। श्रीमती बेसेंट कॉमनवेल्थ ऑफ इण्डिया बिल के सम्बन्ध में सलाह मशवरा करने के लिए उनके पास आई थीं लेकिन चित्तरंजन ने इसका समर्थन करने से इन्कार कर दिया। डॉ. की सलाह पर वे दार्जिलिंग आराम करने गए थे किन्तु स्वराजदल के भविष्य की चिन्ता और देश की दुरवस्था उनके दिमाग में सदा घूमती रहती थी इसलिए उनका शरीर अत्यन्त कमजोर होने लगा। अपने जीवन के अन्तिम दिनों में उनके व्यवहार में भी परिवर्तन आने लगा था। 14 जून को उन्हें तेज बुखार आया, वे पूरे दिन बुखार दर्द से बेचैन रहे। 15 जून शाम 5 बजकर 15 मिनट पर यह उन्होंने इस संसार को त्याग दिया।

चितरंजन जी एक अच्छे साहित्यकार भी थे। 1895, में चितरंजन की सबसे पहली रचना माचल जोगिता प्रकाशित हुई । वार- वनिता उनकी प्रसिद्ध रचना है। जब यह पुस्तक बाजार में आई तो ब्रह्म समाज में तहलका मच गया। इसमें पतिता का करुण वर्णन है। समाज में वे कितनी उपेक्षित हैं। कुलागनाएं होते हुए भी परिस्थिति एवं समाज की निष्ठुरता के कारण तिरस्कृत होकर पतित जीवन बिताने के लिए बाध्य है। उनकी कविताओं के

कारण उन पर नास्तिकता का भी आरोप लगा जबकि वे वैष्णव भक्त थे । उनका दूसरा काव्य संग्रह 'माला' 1904 में, निकला और 1903 में सागर - संगीत' प्रकाशित हुआ । डालम उनको द्वारा कला रचित लम्बी कहानी है।

निष्कर्षः रवीन्द्रनाथ टैगोर जी के अनुसार वस्तुतः व्यक्ति अपनी देन के द्वारा ही अपने को प्रकट करता है, और चितरंजन अपने देशवासियों के लिए जो सर्वोत्तम देन छोड़ गए हैं वह कोई विशेष राजनीतिक या सामाजिक कार्यक्रम नहीं आकांक्षा की सृजनकारी - उत्पादक शक्ति है जो उनके त्याग में अमर हो गई है। वरण एक महान जीवन द्वारा निरूपित त्याग में अमर हो गयी है। वर्तमान पीढ़ी को उनके जीवन से बहुत कुछ सीखने की आवश्यकता है। वे चाहते तो वकालत की सफलता के बाद आराम से प्रसिद्ध व्यक्ति के रूप में अपना जीवन बीताते लेकिन देश सेवा की भावना ने उन्हें ऐसा नहीं करने दिया। उन्होंने अपने जीवन का एक एक पल देश के नाम कर दिया था। देशबन्धु चित्तरंजन एक महान आदर्श है।

संदर्भ:

क्रम संख्या	पुस्तक का नाम	लेखक का नाम
1	त्याग और परोपकार के आराधक देशबन्धु चित्तरंजन दास	पं. श्रीराम शर्मा आचार्य
2	चित्तरंजन दासः उनकी दृष्टि और विचारों की जीवनी	वेरिन्दर ग्रोवर
3	देशबन्धु चित्तरंजन दास	जे. के. वर्मा
4	https://shorturl.at/E5ZuQ	
5	https://shorturl.at/8yXLj	

****